# चतुर्थ अध्याय

कक्षा नौवीं एवं दसवीं की हिंदी पाठ्यपुस्तकों

के आशय के आधार पर

अनुशीलन।

# चतुर्थ अध्याय

## कक्षा नौवीं एवं दसवीं के हिंदी पाठ्यपुस्तकों का आशय के आधार पर अनुशीलन।

अध्यापन प्रभावी बनाने के लिए आशय पर प्रभुत्व पाना जरूरी है। आशय ध्यान में लेने के पश्चात अध्यापन के लिए कोई कठिनाई नहीं आती।

### ४.१ आशय की आवश्यकता

आशय पढ़ाते समय केवल आशय नहीं पढा सकते, उस आशय को अध्यापन शास्त्रीय आशय में रूपांतर करना पडता है। इसके लिए आशय की आवश्यकता है।

### ४.१.१ आशय:अर्थ एवं परिभाषा

आशाय को अंग्रेजी में Content कहते हैं।

Content means the ideas or meanings prescribed or to be presented inspeach or writing.

**परिभाषा :-** आशय का मतलब छात्रों को पढाये जानेवाले अध्यापन का पाठ्यांश या पाठ्यवस्तु।१

आशय का मतलब पाठ्यपुस्तक में मुद्रित विषय।

आशय का मतलब अर्थपूर्ण पाठ्यांश

**आशय का स्वरुप-**

आशय में विविध घटकों का पृथ:करण करके, उनका तार्किक क्रम लगाकर घटक अध्यापन के लिए आवश्यक कृति का विचार अध्यापक को करना चाहिए।

प्रत्येक अध्यापक के पास परिणामकारक अध्यापन करने के लिए दो प्रकार के आशय प्रभुत्व पाना आवश्यक है।

**(१) न्यूनतम प्रभुत्व-**

१. आशय पर न्यूनतम प्रभुत्व का मतलब है- आशय के विषय में गलत न बताना या छात्रों की समस्याओं का निराकरण करना अथवा पूर्ण तासिका में अध्यापन का कार्य करते रहना आदि का समावेश होता है। उदा. स्पष्टीकरण, कथन, व्याख्यान पद्धति का उपयोग।

२. न्यूनतम प्रभुत्व के अभाव से अध्यापन पर परिणामकारक प्रभाव कम होता है।

(२) गहरा प्रभुत्व-

१. गहरा प्रभुत्व स्तर में जहाँ आवश्यक है वहाँ स्पष्टीकरण करना अन्य विषयों से समवाय करना, विविध संदर्भो के साथ स्पष्ट करना, कठिन संबोधों को सरल अर्थ में समझाना, पर्यायी शब्दों का उपयोग करना आदि।

२. गहरा प्रभुत्व स्तर से अध्यापन की परिणामकारकता का विकास होता है।

आशय विश्लेषण करते समय उपर्युक्त सभी बातों पर विचार करना चाहिए।

## पाठ्यवस्तु के आशय के प्रकार -

कक्षा नौवीं एवं दसवीं के पाठ्यवस्तु के आशय विभिन्न प्रकार के होते हैं। छात्रों का भाषिक एवं आशय की दृष्टि से विकास करने के लिए पाठ्यवस्तु विभिन्न प्रकार की दी जाती है।

पाठ्यवस्तु के आशय निम्नप्रकार के होते हैं।

सामाजिक
मनोवैज्ञानिक
देशभक्ति एकता
आत्मकथनात्मक
उपदेशपर
विचारप्रधान
वर्णनात्मक
राजनीतिक
साहसी
आदर्शप्रधान
वैज्ञानिक
नितीपरक
काल्पनिक
खेलकूदपर
व्यंग्यात्मक
सांस्कृतिक
चरित्रप्रधान
मानवतावादी
भक्तिप्रधान

धार्मिक

प्रतीकात्मक

आशय के अनुसार पाठ्यपुस्तक बनायी जाती है। छात्रों में देशभक्ति निर्माण होने की आवश्यकता है। समाज की नींव देशभक्तिपर आधारित है। आज के बच्चे भविष्य के नागरिक है। देश प्रेम पर आधारित पाठ होने चाहिए। भारतीय संस्कृति महान है। देश की एकता रखने के लिए देशप्रेम आवश्यक है। उन पाठों को प्रभावी ढंग से छात्रों को पढाना जरूरी है, ताकि देशप्रेम जागृत हो सके।

इस प्रकार विभिन्न प्रकार के आशय के समावेश पाठ्यपुस्तक मे हैं।

कक्षा नौवीं के पाठ्यपुस्तक में १७ गद्य पाठ, ८ पद्य पाठ, ४ समूह गीत हैं।

कक्षा दसवी की पाठ्यपुस्तक में १३ गद्य पाठ, ८ पद्य पाठ हैं।

## ४.२ कक्षा नौवीं की हिंदी पाठ्यपुस्तक में से पाठों का आशय (आशय की दृष्टि से)

### पाठ क्र. १ जुड़वाँ भाई (सामाजिक एवं उपदेशपर कहानी)

एक ही माँ से उत्पन्न जुड़वाँ बच्चों में से एक बालक राजघराने में पलने के कारण पराक्रमी राजा तथा दूसरा जानवरों के बच्चों के साथ पलने के कारण पशुमानव बना, जो अंतत: वातावरण बदल जाने से मानव की तरह जीने लगा। मानव की तरह बोलने भी लगा।

### पाठ क्र. २ पेड़, पशु, मनुष्य। (सामाजिक एवं उपदेशपर निबंध)

लेखक ने पेड़, पशु और मनुष्य में अंतर महसूस करता है। इन तीनों को एक सूत्र में रखते हुए लेखक ने बताया है कि जिसमें जीवन है, पर गति नहीं है, वह पेड़ है, स्थावर है। जिसमें जीवन और गति दोनों है, वह पशु है परंतु जिसमें जीवन और गति के साथ-साथ सही दिशा तथा प्रगति भी है, वह मानव है। अत: प्रगतिशीलता ही मनुष्य की कसौटी है। वही मनुष्य को पेड़ और पशु से अलग करती है।

### पाठ क्र. ३ अलबम (सामाजिक, उपदेशपर, चरित्रप्रधान आदर्शप्रधान कहानी)

पंडित शादीराम निर्धन थे। वे बडे विवश थे। वे लाला सदानंद के पैसे चुकाना चाहते थे, लेकिन विवशता के कारण चुका नहीं पाए। पं. शादीराम लाला सदानंद के प्रति कभी भी कृतघ्न नहीं हुए।

### पाठ क्र. ४ बिन बुलाए वनराज पधारे (साहसी कहानी)

त्रिवेदी जी शिकार करते हैं। वे शेर की शिकार करते हैं। शिकार करने के लिए अदम्य साहस, निर्भयता तथा तत्काल निर्णयात्मक सूझ-बूझ की आवश्यकता होती है।

### पाठ क्र. ५ गंगामैया (वर्णनात्मक निबंध)

गंगा के उद्भव, प्रवाह विस्तार तथा महात्म्य का वर्णन किया है। गंगा समाज की माता है। गंगा नदी से बहुत लाभ हुए हैं। गंगा को उद्गम से लेकर अंत तक विभिन्न नामों से पहचाना जाता है।

### पाठ क्र. ६ सुनहरा मुर्गा, काला बंदर और लाल अमरुद का पेड (सामाजिक, देशभक्ति, एकता की कहानी)

सुनहारा मुर्गा, काला बंदर ओर लाल अमरुद का पेड इनमें एकता थी। इनका कोई भी बाल बाका नहीं कर सका था। उनमें विश्वासपूर्ण सहयोग-सहकार मित्रता का आधार थी। मुसीबत की घडी में धीरज खोकर एक दूसरे पर क्रोध एवं दोषारोपण करने से उनकी एकता टूट गई, और उनका विनाश हो गया।

### पाठ क्र. ७ शिवाजी का सच्चा रुप (देशभक्ति, चरित्रप्रधान, एकता, आदर्शप्रधान एकांकी)

महाराज शिवाजी एक कुशल, दूरदर्शी तथा पराक्रमी राजपुरुष होने के साथ-साथ सर्वोच्च गुणों से संपन्न थे। उनके मन में सभी धर्मों के प्रति समान आदरभाव था। वे पराई स्त्री को माँ के समान मानते थे। उनकी इज्जत करते थे।

### पाठ क्र. ८ मजे रेल्वे सफर के (व्यंग्यात्मक निबंध)

लेखक ने रेल की सफर करते समय अव्यवस्था, दुरावस्था, कष्टप्रद का अनुभव लिया था। रेल की सफर करना मानो लड़ाई पर जाना है। रेल का सफर कभी भी अंतिम सफर साबित हो सकता है।

### पाठ क्र. ९ दीपावली (सामाजिक, सांस्कृतिक निबंध)

लेखक ने सामाजिक मंगलेच्छा के प्रतिमापर्व दीपावली के सामाजिक-सांस्कृतिक महत्त्व को उजागर किया है। प्राचीन इतिहास पर प्रकाश डाला है। दीपावली मानव की नश्वर इच्छा को अमरत्व प्रदान करती है तथा अभावों के बंधनों से मुक्त होने का ज्योतिर्मय संदेश देती है।

## पाठ क्र. १० बेड़ी (सामाजिक, मानवतावादी कहानी)

भिक्षुक अपने लड़के को भीख माँगने के लिए कहता है, लेकिन एक दिन भाग जाने से उसके पैर में बेड़ी डालता है। लड़का मोटर से टकरा जाता है, और उसकी मृत्यु हो जाती है। गरीबी की बेडी को मृत्यु ही काटती है।

## पाठ क्र. ११ साइकिल चोरी जाने का सुख (व्यंग्यात्मक निबंध)

लेखक की साइकिल चोरी हो जाती है। लेखक को लगता है कि साइकिल स्थानांतरण हो गई है। सभी को खबर मिलती है कि, लेखक की साइकिल चोरी हो गई है। लोग साइकिल के बदले लेखक की प्रशंसा करते हैं। आज के युग में सहानुभूति, संवदेना प्रकट करना केवल एक दिखावा हो गया है।

## पाठ क्र. १२ भारतीय महिला खिलाड़ी (खेल कूदपर लेख)

भारतीय महिला खिलाड़ियों का योगदान बहुत उत्साहवर्धक नहीं है। आरती साहा ने तैराकी के क्षेत्र में नाम प्राप्त किया है। स्टेफी डिसोझा एलिझाबेथ डेवनपोर्ट, लीलाराव आदि माहिलाओं का दौड़ और कूद के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य है।

## पाठ क्र. १३ आठ दिन की जिंदगी (सामाजिक, उपदेशपर, चरित्रप्रधान, आदर्शप्रधान कहानी)

बिंद्रा के माता-पिता ने उसे लालन-पालन किया। उसे डाक्टर बनाया। लेकिन बिंद्रा अपने माता-पिता-रामधन और रामकली का सहारा नहीं बना। रामधन और रामकली का दिल बैठने लगा।

## पाठ क्र. १४ विक्रम साराभाई (वैज्ञानिक लेख)

विक्रम साराभाई एक उच्चकोटि के वैज्ञानिक होने के साथ-साथ कला, शिक्षा एवं समाजसेवा में विशेष रुचि रखते थे। कास्मिक किरणें तथा परमाणु शक्ति के अनुसंधान के लिए वे सदैव स्मरण रहेंगे।

## पाठ क्र. १५ फाँसी का प्रायश्चित (देशभक्ति एकता की कहानी)

वॉर्डर कैदी ने एक क्रांतीकारिकों फाँसी देने का नीच काम किया था। इसलिए सभी कैदियों ने उसका बहिष्कार किया। वॉर्डर कैदी ने उसका प्रायश्चित करने के लिए सुपरिंटेंडेंट से कहा कि, 'एक महीने की माफी काट ली जाए।'

## पाठ क्र. १६ शोकसभा (व्यंग्यात्मक निबंध)

दफ्तर के एक बाबू की मृत्यु के कारण शोकसभा आयोजित की गई थी। लेकिन वह शोकसभा मानवीय सहानुभूति, समवेदना की परिचायक नहीं थी। वह केवल एक औपचारिकता है।

## पाठ क्र. १७ बैल की बिक्री (सामाजिक, व्यंग्यात्मक कहानी)

मोहन बरसों से ज्वालाप्रसाद का ऋण चुकाने की चेष्टा में था। लेकिन चुका नहीं पाया था। बेटे शिबु को भी समझाता है। शिबु का डाकुओं से मुकाबला कर ज्वालाप्रसाद के रुपए चुकाता है। किसानों की दुरवस्था चित्रण किया है। शोषकों की शोषण वृत्ति का चित्रण किया है।

# कविता-

## पाठ क्र. १ ध्वजा वंदना (देशभक्ति, एकता की कविता)

राष्ट्रीय तिरंगे झंडे का प्रशास्तिगान किया है। मंगलमूर्ति स्वरूप तिरंगा ध्वज बल, बलिदान, विजय, निर्भयता, मानवता एवं सत्य का पथप्रदर्शक है। इसकी आन और शान के लिए हर भारतीय को अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए।

## पाठ क्र. २ मेहनत (सामाजिक,उपदेशपर कविता)

मेहनत मानव का सबसे बड़ा धर्म एवं कर्म है। जिंदगी के रहस्य मेहनत से उजागर होते हैं। अत: हर मानव को मेहनती इन्सान बनना चाहिए।

## पाठ क्र. ३ इंद्रधनुष्य (वर्णनात्मक, प्रतिकात्मक कविता)

नभ में उगनेवाली रंगभरी रेखा इंद्रधनुष्य कहलाती है। बादल धरती पर बरसते हैं। धरती महक उठती है। जीवन में दुख रूपी घटाओं के पीछे भी सुख के रंगों का घेरा है। हर एक के मन में आशा होती है कि दुख के बादल दूर होने पर सुख जरूर मिलेगा।

## पाठ क्र. ४ काँटे कम-से-कम मत बोओ (सामाजिक, उपदेशपर कविता)

मानवजीवन की अगम घाटी में अगर फूल नहीं बो सकते तो कम-से-कम काँटे नहीं बोना चाहिए। ममता, स्नेह पूर्ण व्यवहार से कटुता दूर होती है। हर मानव को दूसरे मानव की सूनी घाटी को खुशियों की मंद मुस्कान से सदैव भरते रहने का प्रयास करना चाहिए।

## पाठ क्र. ५ वह देश कौन-सा है? (देशभक्ति, एकता की कविता)

भारत मनमोहिनी प्रकृति में बसा हुआ धरती का स्वर्ग है। इसके मस्तक पर हिमालय

मुकुट की तरह शोभायमान है एवं रत्नेश निरंतर इसके चरण धो रहा है। भारत में अलौकिक ज्ञान की गंगा बहानेवाले तत्वज्ञ एवं ब्रह्मज्ञानी पैदा हुए। उन्होंने पृथ्वी निवासियों को सर्वप्रथम जागरण का नवसंदेश दिया था।

## पाठ क्र. ६ सुख-दुख (सामाजिक, उपदेशपर कविता)

जग के आँगन में जहाँ उषा का आगमन होता है, वहीं भयावनी रात की सूचक संध्या भी आती है। मानवजीवन के लिए न तो चिर सुख अच्छा है और न ही चिर दुख। सुख-दुख के मधुर मिलन से ही अपूर्ण मानवजीवन को पूर्णता प्राप्त होती है।

## पाठ क्र. ७ वीरों का कैसा हो वसंत? (सामाजिक, उपदेशपर कविता)

वीरों का प्रशास्तिगान किया है। वसंत ऋतु के प्रारंभ में सृष्टि-आभरण पहनकर सौंदर्यवती दिखती है। वीरों के वसंत में कोकिला जब मधुर तान छेड़ती है, तब युद्ध का मारु बाजा भी बज उठता है। रंग और रण दोनों का विधान वीरों के वसंत में होता है।

## पाठ क्र. ८ मानव की है जाति एक ही (सामाजिक, देशभक्ति, एकता की कविता)

अमानवीय विभेद से मनुष्यता की हत्या होती है, विद्वेष भावना बढ़ती है। अत: इसे त्यागकर मानवता के मुरझा रहे पौधे को स्नेह जल से सींचकर पल्लवित करना ही संपूर्ण मानव समुदाय के लिए श्रेयस्कर है।

## ४.२ कक्षा नौवीं की पाठ्यपुस्तक के अंत में चार समूह गीत दिए हैं। वे मात्र कंठस्थ पठन हेतु के लिए है। (देशभक्ति, एकता का गीत)

### (१) सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा-इकबाल (देशभक्ति, एकता का गीत)

देशभक्ती है। राष्ट्रीय एकता, देश में विविधता में एकता है, इसकी जानकारी दी है।

### (२) अभियान गीत- जयशंकर प्रसाद (देशभक्ति, एकता का गीत)

वीरों को प्रेरणा दी है। देश में बहुत सारी कीर्तियाँ हो चुकी है। देश के लोगों ने बहुत कष्ट किए हैं। उनका आदर्श लेकर चलना है।

### (३) देशगीत- श्रीधर पाठक (देशभक्ति, एकता का गीत)

भारत के प्राकृतिक सौदर्य का वर्णन किया है। स्वतंत्रता से बंधुता से जीने के लिए प्रेरणा दी है।

## (४) अग्निपथ- हरिवंशराय बच्चन (देशभक्ति, एकता का गीत)

कठिन प्रसंग का सामना करना चाहिए। कदम वापस नहीं लेना चाहिए। देश के लिए आगे बढना चाहिए। संकट से मुकाबला करना चाहिए।

# ४.३ कक्षा दसवीं की हिंदी पाठ्य पुस्तक में से पाठों का आशय

## पाठ क्र. १ महकता चरित्र (आदर्शप्रधान कहानी)

डेविड अपने पैरों पर खडा रहना चाहता है। सतिश भारतीय लेखक है। डेविड टैक्सी चलाता है। सतिश और डेविड में भारतीय लोगों के बारे में वार्तालाप होता है। सतिश का स्वदेश प्रेम तथा अपनी एवं अन्य संस्कृतियों के प्रति आदरभाव रखना है। वह कर्तव्य के प्रति निष्ठावान है।

## पाठ क्र. २ बाढ़ का नियंत्रण (व्यंग्यात्मक निबंध)

बाढ़ में दो लोग घिरे हैं, उनको बचाना आवश्यक है, इसलिए लेखक ने पुलिस, फायर ब्रिगेड आदि विभागों में शिकायत की। लेकिन उन विभागों के कर्मचारियों मे कर्तव्यबोध का अभाव खटकता है। विपदाओं के समय भी उनमें अमानवीय आचरण एवं अकर्मण्यता के दर्शन होते हैं।

## पाठ क्र. ३ स्वामी रामानंद तीर्थ (चरित्रप्रधान लेख)

स्वामी रामानंद तीर्थ का जन्म कर्नाटक में हुआ था। मराठवाडा में रहकर शैक्षणिक और राजनीतिक कार्य किए। जीवन का अधिकांश समय तेलंगाना के प्रश्नों के हल करने में लगाया। आध्यात्मिक ज्ञान को बढ़ावा दिया। हैदराबाद हिंदी प्रचार सभा के अध्यक्ष थे।

## पाठ क्र. ४ अपराध के कीड़े ( सामाजिक, उपदेशपर एकांकी)

समाज गरीब को ही चोर समझता है, अमीर को नहीं। विषम परिस्थितियाँ मनुष्य को चोर बनाती हैं। गरीब मंगल चोरी करने पर सचमुच शरमिंदा है, पर अमीर मि. पाल चोरी करने पर मैं शरमिंदा हूँ कहकर भी बेशर्म बने रहते हैं।

## पाठ क्र. ५ आखिर क्यों काँपती है धरती? (वर्णनात्मक लेख)

भूकंप के कारणें की मीमांसा प्रस्तुत की है। विश्व में आए अब तक के भूकंपों ने पच्चीस लाख लोगों की जान ले ली है। भूकंप आने के चार कारण है (१) ज्वालामुखी, (२) विवर्तन भूकंप (३) पृथ्वी का सिकुड़ना(४) प्लेट विवर्तन

## पाठ क्र. ६ पराया बच्चा (सामाजिक कहानी)

आज के परिवार बिखरते हुए दिखाई देते हैं। प्रस्तुत कहानी बिखरते हुए परिवार को सूक्ष्म स्नेहसूत्र से जोड़ने का प्रयत्न करती है। चंपा और उसकी देवरानी के परिवार अलग हो जाते हैं, फिर भी चंपा के हद्य में देवरानी के अबोध शिशु के प्रति स्नेह पूर्ववत ही बना रहता है। देवरानी के पुत्र के प्रति चंपा का आत्मीय लगाव पारिवारिक जीवन का एक उत्कृष्ठ आदर्श है।

## पाठ क्र. ७ डबली बाबू (चरित्रप्रधान लेख)

डबली बाबू कर्मनिष्ठ, आचारनिष्ठ तथा व्यवहार की सच्चाई से मानव की महानता के परिचायक हैं। मनुष्य केवल अक्षरज्ञान तथा पद से ऊँचा नहीं होता। इसके लिए जीवन में सिद्धांत और व्यवहार का समन्वय आवश्यक है। डबली बाबू सिद्धांतो के पालन करने की दृढता से ही साधरण व्यक्ति भी महान बन गए।

## पाठ क्र. ८ यह देश एक है (देशभक्ति, एकतापर निबंध)

हमारा भूगोल ऐसा है कि उसने पहाड़ों और नदियों के द्वारा इस दे़ा को भीतर से बाँट रखा है, साथ ही पहाडों और समुद्रों से घिरे हुए इस विशाल देश को भौगोलिक एकता भी दे रखी है। प्राकृतिक दृष्टि, भारत का उत्तरी भाग, विंध्य से लेकर कृष्णा नदी के उत्तर का वह भाग, कन्या कुमारी का अंतरीप भाग, राजाओं का वर्णन, विज्ञान के द्वारा पहाड़ियों नदियों को लाँघना, भारतवासी की व्याख्या इस भूगोल ने भारत की चौहद्दी बाँध दी है।

## पाठ क्र. ९ अतिथिदेवो भव (व्यंग्यात्मक लेख)

अतिथि को भगवतस्वरूप माना गया है। आज आत्मीयता लुप्त हो गई है। अतिथि को एक संकट के रूप में, उपेक्षाभाव से देखते हैं, फिर भी सामान्य भारतीय अतिथि-सत्कार के संस्कार से पूर्णत: मुक्त नहीं हो सका है। अतिथि का दूसरा अर्थ है असमय, फिर भी अतिथि का यथोचित सत्कार करना चाहिए।

## पाठ क्र. १० लौटना और लौटना (व्यंग्यात्मक कहानी)

हरीश भारतीय है, फिर भी विदेश में पढ़ाई करने के बाद वह पाश्चात्य संस्कृति को आचरण में लाता है। हरीश को उसके माता-पिता ने उसे पढ़ाया, उसे अपने पैरों पर खड़ा किया, लेकिन उसने माता पिता के प्रति कर्तव्यपरायण की भावना नहीं रखी। हरीश स्वार्थी बनता है। माता पिता का हाल तक नहीं पूछता है।

## पाठ क्र. ११ खेल जगत की उड़नपरी (खेलकूदपर निबंध)

पी.टी.उषा ने अंतरराष्ट्रीय स्तर तक दौड़ प्रतियोगिता में जीत हासिल की थी। ४०० मीटर बाधा दौड़ में पी.टी.उषा ने प्रथम स्वर्णपदक प्राप्त किया था। अर्जुन पुरस्कार, पद्मश्री पुरस्कार, द्रोणाचार्य पुरस्कार प्राप्त कर चुकी है। उसको प्रशिक्षक नांबियार जी का कुशल मार्गदर्शन मिला है।

## पाठ क्र. १२ जनक की पीड़ा (व्यंग्यात्मक कहानी)

जनक के माध्यम वृद्धावस्था के दयनीय एवं उपेक्षित जीवन का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया है। जनक सीता को गोद लेता है। उसका लालन-पालन करता है। स्वयं कोल्हू का बैल बनकर उसको खुशियाँ देता है। सीता के विवाह के उपरांत जनक को मदद नहीं करती है। जनक की स्थिति दयनीय हो जाती है।

## पाठ क्र. १३ बुद्धिमानों के बीच (व्यंग्यात्मक संस्मरण)

लेखक ने व्यंग्यात्मक शैली में मनुष्य के व्यक्तित्व की एक विशेष प्रवृत्ति को उद्घाटित किया है। व्यक्ति कभी-कभी स्वयं दूसरों की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान समझने लगता है। ऐसे व्यक्ति दूसरों को मूर्ख बनाने के प्रयास में स्वयं ही उपहास के पात्र बन जाते हैं।

लेखक बेवकूफ ढूँढने निकले हैं। एक शायरी साहब से मिलने के बाद वे कहने लगे कि आज गालिब को कौन समझते हैं? जैसे वे ही सब कुछ जानते हैं? दूसरे कोई समझते ही नहीं। उन्होंने लेखक से यह भी कहा कि बेवकूफों की भी टाईप होती है। उन्होंने बुद्धिमान कालोनी में जाने की सलाह दी।

एक संवाददाता के मकान में गए। उनके मकान में दीवार पर लक्ष्मीवाहन की तस्वीर थी। लेखक के सामने देशी धूम्रपान सामग्री निकालकर पेश की। और कहने लगे यह बुद्धिमान कालोनी है, लेकिन यहाँ रहनेवाले सभी लोग बेवकूफ हैं।

संवाददाता ने एक मकान बताया जहाँ आपको बेवकूफ मिल जाएगा। वहाँ पहुँचने के पश्चात उस मकान के मालिक ने कहा आप जिस मकान में गए थे, वे अकेले ही बेवकूफ हैं। हिंदी प्रेमी आदमी ने लेखक न चाहते हुए भी आधी रात तक बातें करते रहें।

आधी रात घर लौटते समय फौजदार ने लेखक को पकड लिया, उनपर शक पैदा किया। लेखक की हाथ की घडी ले ली। रसीद दिखाकर ले जाने की बात की।

थोडे दिनों के बाद ससुर का पत्र आया, तुम अव्वल दर्जे के बेवकूफ हो।

इसप्रकार जो लोग अपने को बुद्धिमान समझते है, वे ही उपहास के पात्र बन जाते हैं।

## कविता-

### पाठ क्र. १ भूतल को स्वर्ग बनाने आया (देशभक्तिपरक कविता)

धरती पर जब पाप का बोझ बढ़ जाता है, तो इसपर संतुलन बनाए रखने के लिए ईश्वर अवतार लेते हैं। राम इस धरती से दु:ख, शोषण, लाचारी, अत्याचार, भय आदि मिटाकर तथा सुख, शांति, विश्वास, मर्यादा, मनुष्यत्व वैभव, ईश्वरता इत्यादि स्थापित करके इस धरती को स्वर्ग बनाने आए हैं।

### पाठ क्र. २ जगजीवन में जो चिर महान (मानवतावादी कविता)

कवि ईश्वर से वरदान माँगते हैं, जिससे जीवन में व्याप्त, भय संशय और अंधविश्वासों से मुक्ति प्राप्त करना चाहते हैं। मनुष्यों के दुखों का निवारण कर विश्व में शांति तथा नवजीवन की पुनर्प्रतिष्ठा करने की शक्ति मिले।

### पाठ क्र. ३ नीड़ का निर्माण फिर-फिर (उपदेशपरक कविता)

मनुष्य को विपत्तियों, आपदाओं एवं संघर्षो से निराश होने की अपेक्षा उनका दृढतापूर्वक सामना करना चाहिए। काली भयावह रात के पश्चात मंगलमय प्रभात का आगमन निश्चित है उसी प्रकार दु:ख के बाद सुख का क्रम भी निश्चित है।

### पाठ क्र. ४ वनफूल (उपदेशपरक कविता)

संघर्षशील जीवन की कामना की है। विषम परिस्थितियाँ एवं कठिनाइयाँ ही जीवनसंघर्ष को प्रेरणा देती हैं। संघर्ष जीवन को सार्थकता और समाज को सुख प्रदान करता है।

### पाठ क्र. ५ धरती स्वर्ग समान है (देशभक्तिपर कविता)

ईश्वर का निवास मानवहद्‌य में ही होता है। मनुष्य के ह्‌दय में बसा प्यार और उसके प्राकृतिक मानवीय गुण इस धरती को स्वर्ग बना सकते हैं, किंतु इसके लिए छुआछूत, संकीर्ण, सांप्रदायिक भावना तथा अंधविश्वासों से मानव को मुक्त होना चाहिए।

### पाठ क्र. ६ स्वतंत्रता (देशभक्तिपरक कविता)

स्वाधीनता पलभर की ही सही, अमूल्य होती है। स्वाधीन देश के नागरिकों को चाहिए कि कर्म करते समय न्याय और नीति का मार्ग अपनाएँ।

### पाठ क्र. ७ यह मेरा कश्मीर ( देशभक्तिपर कविता)

कश्मीर के प्राकृतिक सौंदर्य का सहज, सरल शैली में मनोरम एवं सजीव चित्रण

किया है। भारतवासियों के स्वदेश प्रेम, त्याग, बलिदान आदि भावनाओं की भी अभिव्यक्ति हुई है।

**पाठ क्र. ८ मिटने का अधिकार (उपदेशपर कविता)**

दूसरों के लिए मिटने में ही मनुष्य जीवन की सार्थकता है। जीवन की सार्थकता मनुष्य के दीर्घायु होने में नहीं अपितु आहत मानवता के उद्धार हेतु अपना सर्वस्व न्योछावर कर देने में है।

# *निष्कर्ष*

कक्षा नौवीं एवं दसवीं की पाठ्यपुस्तक का आशय की दृष्टि से अनुशीलन किया है। पाठ्यपुस्तक की विशेषताओं की समीक्षा प्रथम अध्याय में की है। पाठों का चयन ठीक से किया है। पाठ्यपुस्तक विशेषताओं के अनुसार बनाया है। पाठ के आशय छात्रों के स्तरानुकूल बनायें है। पाठ विभिन्न प्रकार के हैं। सामाजिक, आर्थिक, राजकिय, भावनिक; साहसी कथा, देशप्रेम, नैतिकता आदि कई दृष्टि से आशय के पाठ दिए हैं। सभी पाठों का संक्षिप्त आशय लिखा हैं।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक में विभिन्न प्रकार के पाठ दिए गए है। छात्रों का आशय भंडार बढ़ाने के लिए सहायक सिद्ध होती है। विभिन्न लेखक कों के पाठ का समावेश किया है। आशय विभिन्न प्रकार के स्पष्ट किए है। छात्र पाठ्यपुस्तक का वाचन समझकर नहीं पढ़ते। परीक्षा के दृष्टि से ही पाठ का अध्ययन करते है। पाठ्यपुस्तक मे कहानी, जीवनी, एकांकी, निबंध, कविता आदि के माध्यम से आशय स्पष्ट किए है। पाठ के आशय विचारप्रधान, प्रेरणाप्रधान है।

# *संदर्भ*

१. आशययुक्त अध्यापन पद्धति: हिंदी

डॉ.सौ.देशपांडे सुलोचना श्रीहरी

पृ.क्र.९८।